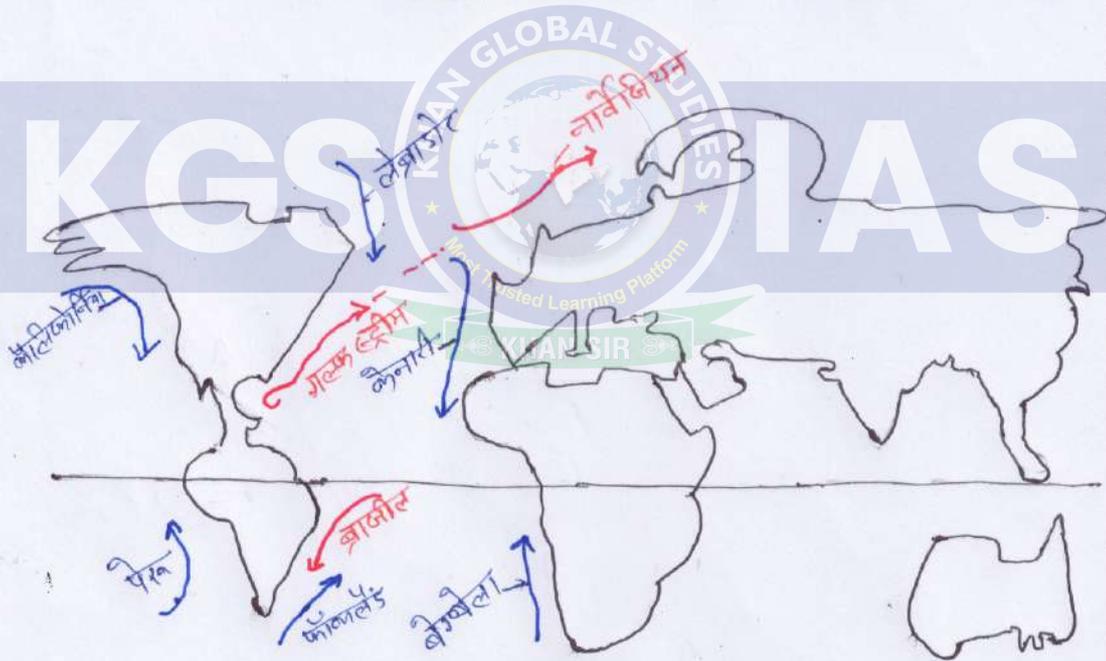


## सागरीय जल-धारायें

- यह एक विरोध जल प्रवाह है [सागर में बहने वाली नदी]
- तापमान के आधार पर यह दो प्रजात की होती हैं-
  - (1) गर्म जलधारा (2) ठंडी जलधारा
- स्थिति के आधार पर भी इनके दो प्रजात देखे जा सकते हैं-
  - (1) सतही जलधारा (Surface Current)
  - (2) गहरी सागरीय धारा (Deep Sea Current)



→ क्षेत्रीय जलवायु पर प्रभाव

- शुष्क ठंडे मरुस्थल का निर्माण (ठंडी)
- आर्द्रता का प्रसार (गर्म) → वर्षण

→ मत्स्यधन पर प्रभाव

- ठण्डी खं गर्म जल धाराओं के समिश्रण से लवणों का गहरे सागर से लहर पर आना → मत्स्यधन के लिए अनुकूल स्थिति का निर्माण।
- अपवर्तन की क्रिया द्वारा ठण्डी जल पोषण तत्वों को गहरे सागर से तट पर लाता है - मत्स्यधन के लिए अनुकूल
  - ↳ उदाहरण - पेरू
- जल धाराये मछलियों के प्रवासन में सहायक होती हैं।

- जौवहन पर प्रभाव -:

- गर्म जल धाराये बर्फ को पिघलाकर बन्दरगाहों को आवागमन हेतु सुलभ बनाने में सहायक हैं - मुरमांस्क सीट
- जल धाराये बहावों की गति को प्रभावित करती हैं।
- जल धाराये जलेशिथर के बहाव की दिशा निर्धारित करती हैं।

\* मार्केटिक समूह के देश -:

↳ अमेरिका, कनाडा, ग्रीनलैंड, नोर्वे, स्वीडन व रूस

\* मार्केटिक महासागर के सात (7) सागर -:

↳ ब्रेन्ट, ग्रीनलैंड, आरा, लैटिव, इस्ट साइबेरियन, चुक्ची सागर, बोफोर्ट सागर

⇒ आर्कटिक की बर्फ पिघलने का प्रभाव

लाभ

- संसाधनों के भण्डार की उपलब्धता
- जीवन यातायात में सहायता
- कृषि योग्य अनुकूल जलवायु की उपलब्धता

हानि

- ↳ बर्फ की अपेक्षा जल में सूर्य किरणों का परावर्तन कम होने के कारण वैश्विक तापन में वृद्धि होगी।
- ↳ ग्रीन हाउस गैस (मीथेन) में वृद्धि होगी

↳ आवास विनाश के साथ-साथ जैव-विविधता का हानि होगा

↳ जलधाराओं के असन्तुलन के कारण पृथ्वी का ऊष्मा संतुलन असन्तुलित होगा।

↳ वैश्विक शक्तियां इस क्षेत्र के संसाधनों के लिए होड़ लगायेंगी

प्रश्न - भारत आर्कटिक क्षेत्र में दिलचस्पी क्यों दिखा रहा है ?

→ तेल, जैवजला, जिप्सम, लौहा, सीसा, जिंक आदि संसाधनों का भण्डार उपलब्ध है अतः भारत तकनीकी

उपलब्ध कराकर संसाधनों को प्राप्त कर सकता है।

- कुशल श्रमिक बल भेजकर रोजगार उपलब्ध करा सकता है।
- वैश्विक गठबंधन का भाग बन सकता है।
- अनुसंधान संस्थान स्थापित कर नवान्सार में लक्ष्य की भूमिका निभा सकता है।
- चीन की वैश्विक प्रसार की नींव को चुनौती दे सकता है।

\* भारत की आर्कटिक क्षेत्र में रुचि की शुरुआत स्वल्बर्ड संधि-1920 से मानी जा सकती है। यह संधि फ्रांस की राजधानी पेरिस में हुई।

↳ सम्मिलित देश - नॉर्वे, अमेरिका, डेनमार्क, फ्रांस, इटली, जापान, नीदरलैंड, ब्रिटेन और आयरलैंड

↳ भारत ने 1007 में आर्कटिक अनुसंधान कार्यक्रम की शुरुआत की।

↳ भारतीय आर्कटिक नीति के 6 स्तम्भ निम्नलिखित हैं:-

1. विज्ञान एवं अनुसंधान
2. पर्यावरणीय संरक्षण
3. आर्थिक एवं मानवीय विकास
4. परिवहन एवं संचार
5. प्रशासन एवं अन्तर्राष्ट्रीय गठबंधन
6. राष्ट्रीय क्षमता निर्माण

⇒ विश्व की प्रमुख जनजातियां -

- उत्तरी अमेरिका - अल्कीमो, इन्विए, अमेरि इण्डियन्स
- दक्षिण अमेरिका - मैस्टीजो, मुलेटो, जैम्बो
- अफ्रीका - बेटुवीन, पिग्मी, बुशमैन, मसाई, हाउसा, फूलानी,
- रूस - थाकूत
- ऑस्ट्रेलिया - एबोरीजींस, बिन्दीबू,
- न्यूजीलैंड - माओरीज

### दुर्लभ मृदा धातु (Rare Earth metals)

- यह पृथ्वी पर पाये जाने वाले 17 तत्वों का समूह है (15 लैंथेनाइड समूह के + स्कैंडियम तथा इट्रियम)
- इस समूह का नाम दुर्लभ होने के बावजूद इसमें पाये जाने वाले कई तत्व विश्व में कई स्थानों पर सुलभता से उपलब्ध हैं। मुख्यतः मीनाजाइट, लोपाराइट और वास्तनासाइट आदि खनिजों में ये धातु पाये जाते हैं।
- अपनी विशेषताओं के कारण इन धातुओं का कई उद्योगों में प्रयोग देखा जाता है। लगभग 200 औद्योगिक उत्पाद इन धातुओं के उपयोग द्वारा बनाये जाते हैं जैसे - मोबाइल फोन, कम्प्यूटर हार्ड डिस्क, विद्युत बैटरी, TV स्क्रीन आदि में इन धातुओं का

प्रयोग देखा जाता है। ये धातु पोट्रैलियम एवं लॉन्च के उद्योग में भी प्रयोग में लाये जाते हैं।

- इन धातुओं का वैश्विक वितरण लगभग हर महादीप पर देखा गया है किन्तु इनके उत्पादन में चीन ने खूब अग्रणी भूमिका निभाई है।
- संसाधनों के वितरण के अनुसार लगभग 80% दुर्लभ मृदा धातु भंडार चार देशों में पाये जाते हैं - चीन > विषतनाम > ब्राजील > रूस

⇒ विश्व के जलवायु प्रदेश -

